दो दल बनाकर पक्ष और विपक्ष की चर्चा कर कार्यकर्ताओं का ज्ञानवर्धन किया जाता। लगभग सभी महत्वपूर्ण विषयों पर गोष्ठियां की जाती थीं। पण्डित जी लगभग पांच माह लखनऊ जिला जेल में रहे।

इस काल में संघ के पक्ष और विपक्ष में प्रकाशित होने वाले सभी समाचार पत्र एवं पुस्तकें जेल में पहुंचें इसकी व्यवस्था पण्डित जी ने की थी। जेल में अव्यवस्था और उत्पीड़न के समाचार समाचार-पत्रों में प्रकाशित होते रहें। इसकी भी व्यवस्था की गई। जेल से बाहर आने पर पांचजन्य और राष्ट्रधर्म का पुनः प्रकाशन हो गया। 6 अगस्त 1948 को पूज्य श्री गुरूजी (राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के सरसंघचालक श्री पूजनीय श्री माधवराव सदाशिवराव गोलवलकर) कारावास से मुक्त कर दिये गये और नागपुर से दिल्ली आ गये।

पण्डित जी भूमिगत हो गये और सत्याग्रह का संचालन गुप्त रहकर करने लगे। जैसे-जैसे सत्याग्रह जोर पकड़ता गया। पण्डित नेहरू की बौखलाहट बढ़ती गई। 20 दिसम्बर को उन्होंने संघ को कुचल डालने की धमकी दी। एक ओर कांग्रेस बौखला रही थी परन्तु देश के विचारवान राष्ट्रीय नेताओं और प्रमुख पत्रकारों की चिन्ता बढ़ती जा रही थी। चारों ओर से संघ पर प्रतिबन्ध हटाने की मांग बुलन्द होने लगी और संघ के समर्थन में रोज लेख निकलने लगे। मद्रास के उदार दल के नेता श्री टी.आर. वेंकटरमन शास्त्री, पण्डित मौलिचन्द्र शर्मा, तथा केसरी के सम्पादक श्री ग.वि. केतकर की मध्यस्थता के प्रयासों के पश्चात् सरदार पटेल ने संघ पर से प्रतिबन्ध हटाने के लिए अपने निर्णय पर पुनः विचार करने का आश्वासन दिया। जिसके फलस्वरूप 21 जनवरी 1947 को सत्याग्रह स्थगित कर दिया गया।

संघ पर से प्रतिबन्ध हटने के पश्चात् दीनदयाल जी पुनः पत्रों के प्रकाशन और संघ के संगठन कार्य में जुट गये। उनके त्यागमय जीवन, निरहंकारी स्वभाव, निःश्छल हृदय, सद्व्यवहार, दयालुता एवं श्रेष्ठ मानवीय व्यवहार एवं प्रकाण्ड पाण्डित्य तथा ज्ञान के संस्मरण देश के कोने-कोने में कार्यकर्ताओं के मन में इतने बिखरे पड़े हैं कि उनसे हजारों पृष्ठों का एक महान ग्रन्थ तैयार हो सकता है। संघ के स्वयंसेवकत्व के गुण उनमें कूट-कूटकर भरे थे और उनका जीवन उनका मूर्तिमंत स्वरूप था। ज्ञान इतना कि वे धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष जैसे विषयों को इतने सरल शब्दों में समझा देते थे कि बहुत कम पढ़ा लिखा व्यक्ति भी उनहें आसानी से समझ लेता था। प्रत्येक विषय के बारे में उनका ज्ञान इतना अधिक था कि आश्चर्य होता था। वे कब पढ़ते थे कहां पढ़ते थे कोई नहीं जानता। पर ऐसा लगता था मानों हर विषय के बारे में उनका ज्ञान जन्मजात है। इस काल में उन्होंने जो कुछ विशिष्ट लेख लिखे वे निम्न प्रकार हैं।